15. १००८ श्री धर्मनाथ जी

यक्ष
किम्पुरुष

चिन्ह
वज्रदंड

वर्ण
पीतवर्ण

यक्षिणी
अनन्तमति

अर्घ

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुन गाई।
बाजत दृम दृम दृम मृदङ्ग गत, नाचत ता थेई थाई।।
परम धरम शम रमन धरम जिन अशरन शरन तिहारी।
पूजों पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ला-८

गर्भकल्याणक

माघ शुक्ला-१३

जन्मकल्याणक

माघ शुक्ला-१३

तपकल्याणक

पौष शुक्ला-१५

केवलज्ञान कल्याणक

पिता: श्री भानुराजा
माता: सुव्रता देवी

मोक्ष स्थान श्री सम्मेदशिखर जी

ज्येष्ठ शुक्ला-४

मोक्षकल्याणक